सा विद्या या विमुक्तये

શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન વિશારદ III

૨૦૨૨

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર

જૂન - 2022

ગામ ____________________

વિદ્યાર્થીનું નામ ____________________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	આત્મ-સમાધિ
(૨)	મોહસ્વરૂપ
(૩)	ચંપા-નગરી
(૪)	ભવ્ય
(૫)	ઓડકાર
(૬)	પાપમય
(૭)	જૈન ધર્મ
(૮)	પ્રભવસ્વામી
(૯)	રાગ-દ્વેષ
(૧૦)	ગોચરી
(૧૧)	અંતર્મુહૂર્ત
(૧૨)	શ્રુતજ્ઞાન
(૧૩)	અનાભિગ્રહિક
(૧૪)	સિદ્ધરૂપી
(૧૫)	અભંગ
(૧૬)	ઈર્યાસમિતિ
(૧૭)	ત્રણમહત્ત
(૧૮)	ધર્મ અધર્મ
(૧૯)	વર્તમાન જોગ
(૨૦)	રત્નશેખરસૂરિ

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	ગુણ
(૨)	શ્રી શય્યંભવસૂરિ
(૩)	અનેકાંત નો
(૪)	મોટા ભય
(૫)	મરૂદેવા માતા
(૬)	પ્રમત્ત સંયત
(૭)	પાર્શ્વનાથ
(૮)	માંગલિક/મંગલાચરણ
(૯)	સમ્યક્ત્વ
(૧૦)	જગગુરુ
(૧૧)	આનંદ
(૧૨)	કાંઈક છે
(૧૩)	સંસાર વૃદ્ધિ ના
(૧૪)	ગ્રંથિ ભેદ
(૧૫)	સુધર્માસ્વામી.

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	કાંઠા ને
(૨)	સંક્ષેપથી
(૩)	ઘર
(૪)	નારકી
(૫)	આગતિ
(૬)	શીઘ્ર/સત્વર
(૭)	લેશ/લેશ્યા
(૮)	પર્વ ના શિખરથી
(૯)	દૃષ્ટિ
(૧૦)	તણખાથી
(૧૧)	પહોથી
(૧૨)	ગયા છે
(૧૩)	સાંશયિક
(૧૪)	જન્મવાળા
(૧૫)	જાણતું
(૧૬)	સર્પ
(૧૭)	કિલામણા/તકલીફ
(૧૮)	સ્મરણ કરે છે
(૧૯)	પુણ્ય ને
(૨૦)	સાંભળો

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	૬	(૬)	૫
(૨)	૧	(૭)	૪
(૩)	૧૦	(૮)	૮
(૪)	૯	(૯)	૭
(૫)	૨	(૧૦)	૩

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	૩૦
(૨)	૯
(૩)	૧૧૧
(૪)	૬
(૫)	૬૨
(૬)	૨૪
(૭)	૧૮૦
(૮)	૪૪
(૯)	૧૪૭
(૧૦)	૬૪

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ×		પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર
(૧)	✓	(૧)	૨૧
(૨)	✓	(૨)	૬
(૩)	✓	(૩)	૧૫
(૪)	×	(૪)	૭
(૫)	×	(૫)	૨
(૬)	✓	(૬)	૧૯
(૭)	×	(૭)	૧૦
(૮)	×	(૮)	૧૮
(૯)	✓	(૯)	૧૨
(૧૦)	×	(૧૦)	૨૨

પ્રિંટિગ ભૂલ ના લીધે અથવા અમારા થી રહેલ ભૂલના લીધે વિદ્યાર્થીઓ ને જે તકલીફ પડે છે. એના માટે ક્ષમાપ્રાર્થી છીયે. એવા સંજોગો માં વિદ્યાર્થી ને એનો પૂરો માર્ક આપવા માં આવે છે.

રીમાર્ક ____________________ તપાસનારની સહી ____________________

प्रश्न - ८

१. साधु छ कारणो थी ज आहार करे छे. अन्यथा साधु आहार न करे. ने आहार पण जघा घरो थी थोडो-थोडो लई ने जीवन निर्वाह करे छे. नहिं तो वधारे व्रत-पच्चक्खाण मांज जीवन व्यतीत थते होय छे. छ कारणो-(१) संयम निर्वाह माटे आहार करे.(२) क्षुधा वेदना ने (भूख ने) शांत करवा माटे (३) ईर्यासमिति ना शुध्ध पालनार्थे करे.(४) जीव रक्षा करवा माटे करे.(५) धर्म-ध्यान अथवा शुभ ध्यान मां स्थिरता जाणववा माटे करे.(६) वडीलो नो विनय करवा तथा एमनी वैयावच्च करवा माटे साधु आहार करे छे.

२. कुदेव-कुगुरु अने कुधर्म ने विषे जे देव-गुरु-धर्म नी बुध्धि होवी ते व्यक्त मिथ्यात्व छे. एवी बुध्धि संज्ञी पंचेन्द्रिय ने ज होय छे. अव्यक्त मिथ्यात्व मोहरुपी छे एटले अज्ञान तुल्य छे. मिथ्यात्व नां प्रकार पांच (१) अभिग्रहिक मि.- परंपराथी चाल्या आवता धर्म ने ज साचुं मानवुं ते.(२) अनभिग्रहिक मि.- बधा ज धर्म साचा छे एवी समजण के बुध्धि ते.(३) आभिनिवेशिक मि.- हुं जे कहुं छुं (मने जे रुचे छे) ते ज धर्म साचो एवी बुध्धि ते.(४) सांशयिक मि.- वस्तुओनुं स्वरुप जे रीते कह्युं छे. ते ज रीते हशे के बीजी रीते हशे? एवी शंका ते.(५) अनाभोगिक मि.- अस्पष्ट चैतन्यवाळा असंज्ञी जीवोने जे मिथ्यात्व मोहनीय० नो उदय ते. आमांथी प्रथम चार व्यक्त मिथ्यात्व छे. ज्यारे छेल्लुं अव्यक्त मिथ्यात्व छे.

३. कर्मो विगेरे ना कारणे जीवो दुःखी थाय - दंडाय ते दंडक कहेवाय छे. जीवोना पदुक भेदो नो विविध गति-जाति ना रुपो करी दंडावुं पडे छे. क्यारेक अनुक्रमे निगोद मां, स्थावर एकेन्द्रिय मां विकलेन्द्रिय मां, गर्भज तिर्यंच मां, नरकगति मां, देव गति मां अने मनुष्य गति जीव दुःखी थाय दंडाय छे. गति नी अपेक्षाए विचार करतां - नारकी नो - १ दंडक, तिर्यंच ना - ९ दंडक (पृथ्वीकायादि स्थावर ना - ५+ विकलेन्द्रिय ना - ३ + गर्भज तिर्यंच नो - १ = ९), मनुष्य नो - १ दंडक अने देव ना - १३ (असुरादि भवनपति ना - १० + व्यंतर नो - १ + ज्योतिषी नो - १ + वैमानिक नो - १ = १३) एवी रीते चार गति ना चोवीस दंडक थाय छे. १+९+१+१३ = २४ दंडक थाय छे.

४. जंबुकुमार ना लग्न आठ कन्याओ साथे थयेला छे. ज्यां करोडो नी नहीं अबजो नी संपत्ति छे, ए कन्याओ भोगनी प्रार्थना करी रही छे. अने आ श्रेष्ठि पुत्र त्याग वैराग्य नी वातो करी रह्यो छे. चोरी करवा आवेलो प्रभवकुमार त्यां पहोंची भींत ने कान अडाडी अंदर मां थती वैराग्य नी वातो काने अथडातां प्रभवकुमार ने झटको लाग्यो, मोहनिद्रा मांथी एनो आत्मा जागी गयो. त्यारे प्रभव पण जंबुकुमार पासे पहोंची गयो, एमना चरणो मां पड्यो. अने कहे छे - तमारुं यौवन अने जीवन सहज छे. हुं तो चोर छुं तमारा घरे मोटी चोरी करी ने आजथी चोरी न करवी पडे एम विचारतो हतो. तमारी वाणी सांभळी तमारी वैराग्य भरेली वाणीए मारुं हृदय मारु जीवन चोरी लीधुं छे. खरेखर आज नी मारी चोरी अंतिम चोरी बनी रहेशे. हुं पण आपनी साथे दीक्षा लईश. एम एनुं महत्व छे.

५. जे पुरुषो श्री पार्श्वनाथ प्रभु ना चरण-युगल ने हमेंशा नमे छे. तेओ नठारा पवन थी क्षोभ पामेला समुद्र ना उग्र तरंगो ना भयंकर शब्दोवाळा अने संभ्रम-उत्कंठा थी भय वडे विह्वळ बनेला खलासीओए जेमां पोतानो व्यापार मूकी दीधो छे. तेमां पण एना वहाण ने अखंडित राखी ईच्छेला कांठाने क्षणवार मां प्राप्त करे छे. माटे जे पुरुषो श्री पार्श्वनाथ प्रभु ना चरण-युगल ने हंमेशा नमे छे. तेओ पोताने ईच्छेला कांठा ने प्राप्त करे छे.